

10/3/26

पत्रां पैश हुई। प्राची बहील अपन। आपसी गण
की तबही को मोंडा चाहा गया। पूर्व में
अनेक अवसर दिए जा चुके हैं अन्य
अवसर दिया जाना उचित नहीं है। इन
प्रकार इसी स्वर पर 09/12 के जहर
स्वार्थ किया जा रहा है। पत्रां फंसल
शुमार होकर दायित्व दफतर हो।

2
3
4
5
6
7
8
9
10